राम और रामकथा

डॉ मंजु तँवर,
एसोसिएट प्रोफेसर,
सत्यवती कालेज (सांध्य),
दिल्ली वि0 विधालय,
अषोक विहार, दिल्ली

उत्तर प्रदेष के कुछ भागों में एक लोकगीत बड़ा प्रचलित है। उसकी कुछ पंक्तियॉ हैं –

''मोरे राम के भीजे मुकुटवा,
लछिमन के पटुकवा
मोरी सीता के भीजै सेनुरवा
त राम घर लौटहिं।''

इसी लोकगीत को आधार बनाकर लिखे गए अपने बहुचर्चित निबंध में हिन्दी के प्रख्यात विद्वान् डॉ0 विद्यानिवास मिश्र लिखते हैं – ''इस देष की ही नहीं, पूरे विष्व की एक कौसल्या है जो हर बारिष में बिसूर रही है – मेरे राम के भीजै मुकुटवा' – मेरे राम का मुकुट भीग रहा होगा। मेरी सन्तान, एष्वर्य की अधिकारिणी सन्तान वन में घूम रही है, उसका मुकुट, उसका ऐष्वर्य भीग रहा है, मेरे राम कब घर लौटेंगबे। मेरे राम के सेवक का दुपुट्टा भीग रहा है, पहरूए का कमरबन्द भीग रहा है, उसका जागरण भीग रहा है। मेरे राम की सहचारिणी सीता का सिन्दूर भीग रहा है, उसका अखण्ड सौभाग्य भीग रहा है। मैं कैसे धीरज धरूँ। मनुष्य की इस सनातन नियति से एकदम आतंकितहो उठा एष्वर्य और निर्वासन दोनों साथ–साथ चलते है।'' राम जिसे एष्वर्य राज्याभिषेक सौंपे जाने को था, उनका निर्वाचन बनवास पहले से बना था। दरअसल लेखक के अनुसार राम मात्र दषरथ पुत्र नहीं थे। वे तो प्रतीक हैं समस्त उदात्त जीवन मूल्यों के। अपनी प्रजा के लिए वह बड़े से बड़ा त्याग करते रहे। ऐसे राजा का मुकुट बहुमूल्य हीरे जवाहरातों से जड़ा आभूषण नहीं, बल्कि हमारे भारतीय समाज के महान आदर्षों , परम्परा प्रेम, निःस्वार्थ त्याग और सत्यनिष्ठा का प्रतीक है। राम ने अपने जीवन में इतने कष्ट क्यों सहे–जन कल्याण के लिए, सम्पूर्ण मानव के मंगल हेतु, जीवन मूल्यों के उत्कर्ष के लिए। जीवन की सिद्वि मानवीय संवेदन के उदात्तीकरण द्वारा ही सम्भव है न कि भौतिक सुखों की होड़ में, ताबड़ तोड़ दौड़ मे। ऐष्वर्य और निर्वासन दोनों साथ साथ चलते हैं। लोकमानस में आज भी बनवासी धुनर्धर राम हो राजा के रूप में स्थित हैं। इसीलिए राम के मुकुट के भीजने की चिन्ता लोकमानस में व्याप्त हैं, साथ ही लक्ष्मण की जागरूकता और सत्यनिष्ठ प्रतिबद्वता रूपी कमरबन्द न भीगे और सीता के अख्वाण्ड सौभाग्य की चिन्ताएँ लोकमानस को आज भी साल रही हैं।

राम का मुकुट, लक्ष्मण का पटुका और सीन का सिन्दूर सार्थक और जीवन्त परम्परा के प्रतीक हैं। उनका भीग कर, गलकर खंडित होकर बह जाने की सम्भावना आजल के जीवन का एक जीवन्त और सार्थक प्रष्न है। जब प्रष्न यह भी है कि आखिर हमारे यह राम आए कहॉ से ?

राम हमारे उत्तर वैदिक काल के महापुरूष हैं। लेकिन इससे भी पूर्व वेदों में 'राम' शब्द का उल्लेख मिलता है, जहॉ उसका अर्थ दषरथ नन्दन राम नहीं, अपितु अन्यान्य व्यक्तियों से है।

जहां तक रामकथा का प्रष्न है, तो इसका मूल स्रोत बाल्मीकि रामायण से माना जाता है। विष्वास किया जाता है कि रामायण वैदिक

साहित्य के बाद मानव कवि द्वारा लिखा पहला काव्य है। इसीलिए इसके रचियता वाल्मीकि को आदि–कवि और इसे आदि–काव्य कहते हैं। अनेकों विद्वानों ने माना कि रामायण सचमुच काव्य–अलंकृत काव्य या ..... जाति के ग्रन्थों में सबसे पहल है। हिन्दू कालगणना के अनुसार रामायण का समय त्रेतायुग माना जाता है। भारतीय काल गणना के अनुसार समय को चार युगों में बॉटा गया है – सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग। एक कलियुग 4,32,000 वर्ष का, द्वापर के 8,64,000 वर्ष का, त्रेतायुग 12,96,000 वर्ष का तथा सतयुग 17,28,000 वर्ष का होता है। इस गणना के अनुसार रामायण का समय न्यूनतम 8,70,000 वर्ष वर्तमान कलियुग के 5,250 वर्ष+बीते द्वापर के 8,64,000 वर्ष सिद्व होता है। कुछ विद्वान इसका तात्पर्य ईसा पूर्व 8,000 से भी लगाते हैं और कुछ विद्वान उसे इससे भी पुराना मानपते हैं। यह हिन्दू स्मृति का वह अंग है, जिसका माध्यम से रघुवंष के राजा राम की गाथा कही गई है इसे सात अध्यायों में बॉटा गया है, जिन्हें काण्ड कहते हैं। वे हैं – बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड – युद्व काण्ड और उत्तर काण्ड।

मूल में इस काव्य का जो रूप रहा हो, वह महाभारत से पूर्ववर्ती हो, उसका वर्तमान रूप महाभारत के बाद का है। कहते हैं कि संसार के समूचे साहित्य में इस प्रकार का लोकप्रिय काव्य जातीय ग्रन्थ नहीं है। समूचा भारतवर्ष एक स्वर से इसे पवित्र आदर्ष काव्य ग्रन्थ मानता है और सम्पूर्ण भारतीय साहित्य का आधा इस महाकाव्य से अनुप्रमाणित है।

प्रत्येक युग के आचार्य कवि और नाटककार इस महाग्रन्था से चालित हुए हैं। कालिदास और भवभूति जैसे संस्कृति कबे महाकवियों की रचनाओं में भी इसका प्रभाव देखा जा सकता है। हिन्दी के रामचरित लेखन से पूर्व अप्रभंष की रचनाओं में रामचरित संबंधी साहित्य मिलता है। रामकथा

सारे भारतवर्ष में रामायण के कई रूप मिलते हैं, जिनमें परस्पर भेद भी हैं। साधारणः बम्बई संस्करण, बंगाली संस्करण और उत्तरी या कष्मीरी संस्करण चर्चित रहे। जहॉ तक काल का संबंध है, तो हमारे दोनों प्रमुख आख्यानों– रामायण और महाभारत के विषय में कुछ भी निष्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। हॉ, इतना अवष्य कहा जा सकता है कि महाभारत के वर्तमान रूप में प्राप्त होने से पहले ही रामायण का वर्तमान रूप प्राप्त हो गया था। ऐसा कहने का ठोस आधार भी है।

महाभारत के वनपर्व में रामायण की कथा के साथ ही कवि वाल्मीकि की चर्चा और राम का विष्णु अवतार होना आदि बातें भी पाई जाती हैं। इसके अलावा महाभारत में किसी राक्षस द्वारा द्रौपदी को चुनाना और उससे युधिष्ठिर के दुखी होने पर रामोपाख्यान सुनाना भी इसी की पुष्टि करता हैं इतना ही नपहीं सीताहरण के आधार का द्रोपदीहरण की घटना की कल्पना की सम्भावना से भी इदंकार नहीं किया जा सकता। यूँ भी मानाा जाता है कि महाभारत का वर्तमान रूप चौथी शताब्दी में प्राप्त हो गया था तो रामायण का वर्तमान रूप उससे एक दो शताब्दी पूर्व प्राप्त हो गया होगा किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि समूचा रामायण समूचे महाभारत से पुराना है। एक यूरोपियन विद्वान ने कहा है कि भारतीय साहत्य के इतिहास में यह अदभुत विरोधाभास है कि रामायण महाभारत से प्राचीन है और महाभारत रामायण से प्राचीन है। दरअसल महाभारत` इनेक उपाष्यान निष्चित ही रामायण से भी पूर्ववर्ती हैं जिनमें कई की चर्चा रामाण में भी आती है जैसे नल, सावित्री आदि के उपाख्यान। परन्तु यह भी सच है कि सम्पूर्ण रामायण में पाण्डवों ी चर्चा कहीं नहीं है। यह भी अनुमान किया गया कि राम का विष्णु रूप में अवतार

माना जाना कृष्ण के अवतार माने जाने के बाद की कल्पना है यद्यपि राम कृष्ण के पूर्ववर्ती अवतार हैं इसके अलावा रामायण में वर्णित सभ्यता उतनी लड़ाकू नहीं है जितनी महाभारत में वर्णित सभ्यता। इससे अनुमान लगाया जासकता है कि रामायण उत्तरकालीन समाज के कवि की रचना है और महाभारत पूर्वकालीन समाज के कवि की। इसके अतिरिक्त रामायण के काल निर्धारण में यदि हम बौद्व काल को केन्द्र में रखकरदेखते हैं तो प्रमाणित होता है कि रामाण बौद्व काल से पहले ही रचित हो गया था। वसुबन्धु के ग्रन्थों के जो चीनी अनुवाद मिलते हैं उनसे स्पष्ट है कि रामायण्ण लगभग इसी रूप में बौद्वों में भी प्रचलित थी। सन ईसवी की पहली श्ताब्दी में विमलसूरि ने रामायण कथा के आधार पर पउमचरिते प्राकृत काव्य लिखा था। 600 ई0 के आसपास कम्बोडिया में रामाण का धार्मिक ग्रन्थ के सबसे प्रचार पाया जाता है। कनिष्क युगीय बौद्व कवि अष्वघोष के बुद्व चरित्र में रामाण के अंषों के मिलते जुलते अंष हैं। इन सब बातों से इतना तो अवष्य ही कहा जाा सकता है कि कूल रामायण बौद्व युग के पहले का तो है ही, हिन्दी साहित्य में रामायण की विस्तृत व्याख्या स्वामी द्वारा प्रचारित रामभक्ति के दो मार्गों निर्गुण व सगुण परम्परा के रूप में हुई। इनमें राम नाम के बारे में दोनों के मतों में कोई विरोध नहीं है, हॉ राम के अर्थ के विषय में दोनों के अवष्य मतभेद हैं। निर्गुणमार्ग के प्रमुख कबीरदास कहते हैं ''दषरथ सुत तिहुलोक बखना। रामनाम का स्मरण जाना'' उधर सगुण मार्गी के प्रमुख कवि तुलसीदास जी कहते हैं –

'जेहि इमि गावहि वेद बुद्य, जाहिर धहि सुनि ध्यान।

सोई दषरथ सुत भगत हित, कोसलतिप भगवान।''

निर्गुणमार्गी अवतारों में, विष्वास नहीं करते थे इसीलिए उनके राम दषरथ सुत नहीं हो सकते थे। लेकिन निर्गुणमार्गी अवतारों में आस्था रखते थे, इसलिए उनके राम दषरथ पुत्र अजिर नररूपधारी थी। यहीं दोनों के दृष्टिकोण में अन्तर हो जाता है लेकिन लीला के संबंध में दो एक थे तथापि निर्गुणमार्गी कवियों के लिए लीला का क्षेत्र देषकाल की सीमाओं से परू सम्प्रर्ण था जबकि सगुणमार्गी कवियों के लिए लीला का अर्थ था – नरवेष में अवतरित भगवान की अली जीवन चार्या। रामभक्ति का साहित्य सामाजिक मर्यादा के रक्षण का साहित्य है।

दक्षिण भारत में आचार्य रामानुज ने श्री भाष्य की रचना की जिसमें राम की व्याख्या के रूप में की गई। इसी सम्प्रदाय में बाद में सीता मूल प्रकृति और राम परमपुरूष मान लिये गए राम की भक्ति का बाद में प्रचार स्वामी रामानन्द ने ने किया। रामानन्द श्री सम्प्रदाय में दीक्षित के दक्षिण भारत में रामभक्ति का प्रचार उनसे भी पहले रामदेव और त्रिलोचन कर चुके थे। रामनारायण की परम्परा में कबीर ने जहॉ रम के निगुर्ण स्वरूप का प्रचार किया वहॉ तुलसी ने दषरथ के राजदषरथी को परमपुरूष मानकर रामचरित्रमानस का प्रणयन किया। रामानन्द के जीवन का ही रामभक्ति का प्रचार पर्यापत मात्रा में हो चुका था। आध्यातम रामायण, भुषुण्डी रामायण, आनन्द रामायण, अद्भुत रामायण की रचना हो चुकी थी।

तुलसी ने राम के चरित्र को लोकमंगल चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया। स्वामी अग्रदास वैधी भक्ति छोड़कर मधुराभक्ति ने मधुरोपासना शुरू की। लेकिन राम की मधुरोपासना का तुलसी की वैधी भक्ति की तुलना में ज्यादा मान्यता प्राप्त नहीं कर सका। तुलसी ने अध्यातम रामायण के दर्षनिक चिन्तन को आधार बनाकर रामचरितमानस में ब्रहृ ,जीव,माया,और जगत अवधारणओं का काव्य रूप दिया। उनके अनुसार राम सच्चिदानन्द भी हैं और विष्णु के आवरण भी। तुलसी की दर्षानिक मान्यताओं के विपरीत

रसिक साम्प्रदाय के जानकी को सखी रूप में किया, लेकिन इस सम्प्रदाय के इष्टदेव राम ही हैं।

दरअसल वैष्णवी भक्ति की परम्परा में रामभक्ति का नया आलवार सन्तों ने में किया। सैद्धान्तिक रूप में रामभक्ति के प्रचार का श्रेय श्री और ब्रह्म सम्प्रदाय के आचार्यों को है। इन आचार्यों की परम्परा में उत्तरी भारत में रामानन्द ने रमा की भक्ति का प्रवर्तन किया। इन्हीं के षिष्य स्वामी रामानन्द ने धनुर्धारी राम की भक्ति का प्रवर्तन किया। इसीलिए कहा गया– भक्ति दक्षिण उपजी, लाये रामानन्द।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में रामचरित्रमानस के आरम्भ में ही विस्तारपूर्वक बताया गया है कि रम की उपेक्षा राम का नाम अधिक उपकारी है। कबीर ने भी कहा है कि मैं भी कह रहा हूँ ब्रह्म और महेष ने भी कहा है कि रमा नाम ही सार तत्व है। भक्ति और भजन जो कुछ भी है वह राम नाम ही और सब कुठ दु,ख है। मन,बचन और कर्म से इनका स्मरण करना ही सार है।'' लेकिन उपासकों के लिए राम नाम ब्रंह्म, विष्णु और षिव रूप है, जो अनंत गुणों का भण्डार है। रमा नाम वह मन्त्र हैं जिसे सीधा जपें तो मुक्ति मिलती है और उल्टा जपें तो शुद्वि होती है। तुलसीदास ने राम नाम की व्याख्या करते हुए लिखा है–

जो आनन्द सिंन्धु सुखरसी। सीकर ते त्रैलोक सुपासी।।

से सुख धाम राम अस नाका। अखिल लोक दायक विश्राम।।

रामचरितमानस के राम मर्यादा पुरूषोत्तम, तेजस्वी,वीर्यवान,विद्वान परक्रमी वीर धनुर्धर प्रजावतसल सर्वषास्त्राों के ज्ञाता और एक आदर्ष पुत्र है।पिता की आज्ञा उनके लिए सर्वोपरि है। इसलिए वह अपना राज्यभिषेक त्यागकर वन गमन का चयन करते हैं वैसे पत्नी वियोग में नितान्त साधारण मनुष्य की तरह ऑसू भी बहाते है। पुष्प वाटिका में राम के प्रति प्रथम दृष्टया आकार्षित होने वाली सीता साधारण कन्या जैसी लगती है किन्तु अपने पति राम के साथ वन गमन करके पतिव्रता और अन्त में बाल्मीकि के आश्रम में रहकर अपने दोनों पुत्रों लव और कुष का पालन पोषण करने वाली और अन्त में राम के साथ अयोध्या वापस न जाकर धरती में समाने वाली सीता एक स्वाभिमानी आधुनिक महिला लगती है। लक्ष्मण ओर भरत के रूप में भ्रातृ प्रेम का उदाहरण शायद समूचे विष्व साहित्य में नहीं मिलेगा। कौषल्या जैसी आदर्ष माता भी अन्यत्र दुर्लभ है। हमारे जन मानस में हनुमान, पवनसुत हनुमान,बजरंग बली , संकटमोचक रमभक्त हनुमान, अतुलित बल, बुद्वि और विवेक के स्वामी के रूप में मन में बसते है लेकिन स्वामी भक्ति का हनुमान से बेहतर उदाहरण महारे पुराणों और महाकाव्यों में नहीं है। जिन्होंनें सभासदों के सामने भरे राम दरबार में अपनी सीता माता द्वारा दी गई रत्नों व मोतियों का की मालाको केवल इसलिए विखेर दिया क्योंकिउसके मोतियों में उन्हों अपने स्वामी राम का नाम नहीं दिखा। वह हवा में उड़कर जाते है और समूचा पर्वत ही उठा लाते है। वह आज के बच्चों के लिए सुपरपावर मैन है। रावण का चरित्र ही अहंकार नाष का प्रतीक है। इसलिए राम कथा और उसके चरित्र न केवल हमारे साहित्य में बल्कि रामलीलाओं, त्यौहारें – दषहरा,दीवाली रमनवमी, हनुमान जयन्ती आदि नुक्कड़ नाटकों, टी.वी. सीरियलों, फिल्मों आदि न जाने कितने आध्यमों से कितने ही रूपों में लोकमानस में रची बसी है। यह आकस्मिक नहीं है कि हिन्दू धर्म द्वारा मनाए जाने वाले चार प्रमुख तयौहारें – होली , दिवाली, दषहरा और रक्षाबन्धन में से दो त्यौहारों दषहरा और दीपावली की पृष्ठभूमि रामकथा ही है। दषहरा यानि राम द्वारा रावण का बध करने –आसुरी प्रवृत्तियों का संहार करने और दीपवली चौदह वर्षों के बनवास के बाद राम के अयोघ्या वापस आने की खुसी में

मनाया जाता है। इन उत्सवों की अपनी एक सामाजिक व वैज्ञानिक पहचान है। लगाभग सत्त के दषक में दूरदर्षन पर रामानन्द सागर द्वारा प्रसारित रामायण धारावाहिक इतना लोकप्रिय हुआ था कि इसके प्रसारण के समय लोकवृन्द टी.वी. पर ऐसा चिपक जाता था कि महानगरें से लेकर कस्बों और गांवों की गलियॉ भी सूनी हो जाती थी।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में कह सकते है''भरत,लक्ष्मण,हनुमान,अंगद,सीता, कौषल्या जैसे पात्र महें प्रेरणा देते है। मानव जीवन के किसी न किसी अंग पर वे प्रकाष डालते हैं या फिर उनसे किसी न किसी सामाजिक असंगति की तीव्र आलोचना व्यंजित होती है या फिर वे मनुष्य और मनुष्य के बीच सद्भावना और परदुखकातरता की सद् वृत्तियों को जगाते हैं।'' इसीलिए आज विष्व की लगभग प्रत्येक भाषा में रामकथा उपलब्ध है जिसकी प्रासंगिकता सार्वभामिक और साव्रकालिक है।

संदर्भ

हजारी प्रसाद द्विवेदी

ग्रंथावली सं0– डॉ मुकुन्द द्विवेदी

हिन्दी गद्यः उद्भव और विकास

सं0– हेमन्त कुकरेती

Copyright © 2015, Dr. Manju Tanwar. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.